Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue March 2023 | Impact Factor 5.320

# संगीत में वाद्य परम्परा

**परमजीत कौर**

एसोसिएट प्रोफेसर, वाद्य संगीत विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय, अंबाला कैंट

**सारांश**

वाद्य– संगीत, नृत्य, रंगमंच तथा वर्तमान में फिल्मो तथा अन्य संचार माध्यमों की आत्मा है। प्राचीन काल में महान दार्शनिक याज्ञवल्क्य ने मात्र वीणा बजाने के रहस्य को जान कर मोक्ष प्राप्त करने का उपाय सुझाया था। परन्तु आज के भौतिक युग में थका हारा व्यक्ति वाद्य वादन से मनोरंजन के अतिरिक्त अपने तन तथा मन की अनेक समस्याओं को म्यूजिक थैरपी से हल करने का प्रयास कर रहा है। भारत में वाद्यों की बनावट, इन के प्रकार तथा वादन की शैलियों की पूर्ण जानकारी, २000 वर्ष पूर्व भरत कृत नाटयशास्त्र में उपलब्ध है। वाद्यों का बनाना, उन्हे बजाना तथा किसी क्षेत्र में उस की विशिष्ट पहचान बनना एक कोतुहल का विषय है। लोक वाद्य – बाँसुरी, संतूर, शहनाई इत्यादि का संगीतकारों द्वारा शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठा दिलवाना वास्तव में वाद्यों के इतिहास की रोचक परम्परा है। यूं तो लोक वाद्य लोकगीतों के सौंदर्य तथा मधुरता को मुखरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है परन्तु ग्रामीण अंचल के विभिन्न संस्कारो, त्योहारों तथा उत्सवों में वाद्यों के बिना इन की कल्पना भी अधूरी है।

हमारा शास्त्रीय संगीत आध्यात्मिक तथा भक्ति भाव को प्रकट करने का प्राचीन माध्यम है परन्तु मुगल काल में श्रंगार भाव को अधिक प्रोत्साहन मिलने से इस का ध्येय कलात्मक अभिव्यक्ति बन गया। शास्त्रीय संगीत की कलात्मक उत्कृष्टता में स्वंतत्र वाद्य वादन ने एक अहम् भूमिका निभाई है, जिस के चलते हमारे वादक कलाकार प० रवि शंकर, उ० जाकिर हुसैन, प० विश्व मोहन भट्ट इत्यादि को विश्व के सर्वोत्तम ''ग्रैमी पुरस्कार'' से नवाजा गया।

**मुख्य शब्दः**– वाद्य; अवनद्ध; घन; सुषिर; तत्

**परिचयः**– संगीत का कोई भी कार्यक्रम वादन के बिना अधूरा है क्योकि जहॉ वाद्य किसी सांगीतिक रचना का ढांचा गत स्वरुप गढ़ता है वही उसे गति और रस से सराबोर कर रंजकता से भी प्रफुल्लित करता है। वाद्य– गायन,वादन, नृत्य एवं रंगमंच का अति महत्वपूर्ण अंग है। वाद्य की इस विशिष्टता के चलते विद्वानों ने संगीत में इस की व्यक्तिपरक छवि को पहचान कर स्वंतत्र वादन परंपरा का शुभारम्भ किया। इसलिए आज हम सितार, सरोद, संतूर, बाँसुरी, शहनाई, तबला इत्यादि का एकल वादन भी सुन सकते है। समूह वाद्य– वादन की कला को कुतुप या ऑर्केस्ट्रा भी कहते है। ऑर्केस्ट्रा भारत में प्राचीन कल से विद्यमान है परन्तु पश्चिम के प्रभाव तथा सिनेमा की आवश्यकता को देखते हुए अब इसका प्रचलन बढ़ने लगा है। भारत के विभिन्न प्रदेशो में लोकोत्सवों में गाने , बजने तथा नृत्यों में अनेक प्रकार के वाद्यों का प्रयोग हुआ जिन्हें लोक वाद्य कहते है। इन्ही

लोक वाद्यों के उत्कृष्ट वादन के विकास से जो वाद्य शास्त्रीय संगीत में अपनाये उन्हें शास्त्रीय संगीत वाद्य (Classical music instrument) नाम दिया गया है।

**इतिहासः** वाद्यों के इतिहास की कहानी मानव विकास की कहानी है। निश्चय ही वाद्यों का निर्माण मानव ने पुरातन काल में आग जलाते समय, शिकार करते हुए आदि क्रियाओ के मध्य सीखा होगा। वाद्यों के लिए उपलब्ध होने वाली सामग्री में वहां की भौगोलिक परिस्थितियों का भी विशेष योगदान रहा होगा।

भारत में वाद्यों का उल्लेख सर्वप्रथम ईसा से ३000 वर्ष पूर्व सिंधुघाटी की सभ्यता की खुदाई से प्राप्त अवशेषों तथा चित्रों में हुआ है। इनमें प्रमुख वाद्य है – करताल, झांझ, डमरू, सीटियां आदि। वैदिक काल में रचित सामवेद एक महत्वपूर्ण सांगीतिक ग्रन्थ है, इसमें भी कुछ वाद्यों का वर्णन है जैसे – आघादि (मंजीरे), भूमि दुंदुभि, दुंदुभि तथा बाँसुरी जैसे वाद्य – तूणव और नाडी। वीणाओं में वाण, कांड, गोधा आदि के नाम भी सम्मिलित है। इसी प्रकार रामायण तथा महाभारत में भी मृदंग, नूपुर, भेरी, पतह, शंख, सप्ततंत्री वीणा आदि वाद्यों की जानकारी मिलती है। २00 ई० पूर्व से २00 ई० के मध्य रचित भारत का नाट्यशास्त्र – अठाईसवें अध्याय से तैंतीसवें अध्याय तक भारतीय संगीत की सम्पूर्ण जानकारी देता है। इन्ही अध्यायों में से तीन वाद्यों के वर्गीकरण तथा उनकी वादन विधि से अवगत करवाते है। भारत द्वारा वाद्यों का चार श्रेणी में वर्गीकरण हमारे देश में ही नहीं विश्व में ही मान्य है। उनके अनुसार – घन, अवनद्ध, सुषिर तथा तत्त वाद्यों के चार प्रकार है। धातुओं से बने वाद्य जो दो धातु खंडो के परस्पर आघात से ध्वनि उत्पन्न करते है। – घन वाद्य कहलाते है जैसे – करताल, चिमटा इत्यादि। चमड़े या डोरी से बंधे वाद्य जैसे ढोल, मृदंग आदि अवनद्ध वाद्य की श्रेणी में आते है। सुषिर वाद्यों में वायु छिद्रो से प्रवेश करके स्वर उत्पन्न करते है जैसे – बाँसुरी, भाहनाई इत्यादि। जिन वाद्यों में तार का प्रयोग होता है तत्त वाद्यों के नाम से जाने जाते है जैस – सितार, सरोद, इत्यादि।

इसके पश्चात जिस ग्रन्थ में संगीत वाद्यों के वादन, व्याकरण तथा वादकों के गुण–दोष का वर्णन मिलता है – वह है १३वी शताब्दी का शारंगदेव कृत ''संगीत रत्नाकर''। वाद्यों के इतिहास में मुसलमानों के आगमन से बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। डमरू, वेणु, तथा वीणा जो हमारे देश के देवकुल वाद्य मने जाते है, मुसलमान काल में इनका स्थान सितार, सरोद, तबला इत्यादि ने ले लिया। अंग्रेजो के भारत आने से हमारे संगीत का इतना भला नहीं हुआ, हाँ पश्चिम का ऑर्केस्ट्रा तथा बैंड ने धीरे – धीरे सम्मानजनक स्थान अर्जित कर लिया।

विष्णु नारायण भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के प्रयत्नों से संगीत स्वतन्त्रता पश्चात् विद्यालयों, महाविद्यालाओ तथा विश्वविधालयों में निरंतर प्रगति कर रहा है। वाद्य संगीत के महत्व को समझते हुए शिक्षण संस्थानों में अब इसे पृथक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

**वाद्यों की बनावट :** अवनद्ध वाद्य अधिकतर चमड़े से मढ़े हुए बेलनाकार के वाद्य है। इनका मुख्य लक्ष्य लय और ताल प्रदान करना है। जिस पर संगीत कला की ईमारत खड़ी हुयी है। तबला हिंदुस्तानी संगीत का महत्वपपूर्ण वाद्य है। शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाला तबला वास्तव में दो वाद्यों की जोड़ी है। इनमे से एक को तबला (दायाँ) और दूसरे को डग्गा (बायाँ) कहते है। तबला लकड़ी का बना

होता है और आकर में ऊपर से चौड़ा और नीचे से सकड़ा होता है। इसका मुख चमड़े की पतली परत से मंढा होता है। डग्गा पहले मिट्टी या लकड़ी का बनाया जाता था लेकिन अब धातु का बनाया जाता है। आकार में तबले के विपरीत ऊपर से सकड़ा तथा नीचे से चौड़ा होता है। दायाँ उँगलियों के मध्य और हथेली से बजाया जाता है जबकि बायाँ (डग्गा) उँगलियों के पोरों, हथेली के मध्य भाग और अंत से बजाया जाता है। हाथों के चलन से ही विभिन्न घरानों का जन्म हुआ है जैसे दिल्ली, अजराना, लखनऊ, बनारस इत्यादि।

**घन वाद्य** : आघात द्वारा बजाये जाने वाले इन वाद्यों की ध्वनि अल्प कालिक होने के कारण इसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत में बहुत कम होता है। जलतरंग तथा काष्ठतरंग ही घन वाद्यों में शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होते है। जलतरंग एक मधुर ताल वाद्य है, इसकी उत्पत्ति भारतीय उपमहाद्वीप में हुई है। इसमें पानी से भरे सिरेमिक या धातु के कटोरे होते है। प्रत्येक कटोरे को वीटर से मारकर बजाया जाता है।

**सुषिर वाद्य** : इन वाद्यों में वायु छिद्रो द्वारा प्रवेश करके स्वर उत्पन्न करती है। हारमोनियम तथा बाँसुरी सुषिर वाद्यों में प्रसिद्ध है। बाँसुरी – बांस की लकड़ी या धातु से बानी होती है। यह एक नली के आकार की होती है और अंदर से खोखली होती है। इसका एक सिरा बंद होता है तथा दूसरा खुला। नली पर अनेक रंध्र ( छिद्र ) होते है। इस के एक सिरे से फूंक मारकर रध्रों पर ऊँगली के संचालन से धुन बनाई जाती है।

**तत् वाद्य** :–संख्या और प्रकार में तत् वाद्य इतने है कि इनकी उत्पत्ति का सही सही आंकलन करना कठिन है। वीणा, सुरबहार, तायुस, सितार, सरोद, सारंगी, संतूर इत्यादि सभी वाद्य शास्त्रीय संगीत के प्रमुख वाद्य है। सितार लयात्मक शैली का आधुनिक वाद्य है जिसका प्रचलन 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रारम्भ हुआ। सितार लगभग चार फुट लम्बा होता है। इसका एक भाग अर्ध गोलाकार तुम्बा या कभी कभी चपटा तुम्बा होता है जिसे कछुआ सितार भी कहते है। तुम्बा ग्रीवा के ओर चिपका होता है और ऊपरी भाग लकड़ी की पट्टी से ढका होता है। ग्रीवा एक लम्बी डांड से जुड़ा होता है। इसके ऊपर पीतल के परदे होते है। तुम्बे के ऊपर वाले हिस्से को तबली कहते है। तबली पर दो पुल होते है, बड़े पुल पर मुख्य तारें तथा छोटे पुल पर तरब की तारें होती है। ये सभी तारें खूंटी पर बंधी होती है। इन तारों को बजाने के लिए मिजराब का प्रयोग होता है।

**प्रमुख वादक** : सितार बजाने वाले वादकों में प० रविशंकर, निखिल बैनर्जी, उ० विलायत खान, आदि महान कलाकार हुए है। बाँसुरी बजाने वालो में हरिप्रसाद चौरसिया, पन्नालाल घोष। संतूर वादन में प० शिव कुमार शर्मा, सतीश व्यास, प० भजन सौपारी। सरोद वादन में अली अकबर खान, अमजद अली खान। वीणा वादन– जिया मोहिणादिन डागर, के आर कुमारस्वामी। रूद्र वीणा – अमजद अली खान। मोहन वीणा – प० विश्व मोहन भट्ट। सारंगी – प० रामनारायण। वायलिन – एम राजम, वी जी जोग। सुरबहार – अन्नापूर्णा देवी, साजिद हुसैन। तबला – अल्ला रखा, जाकिर हुसैन, प० कृष्ण महाराज।

इन वाद्य वादकांने शास्त्रीय संगीत को भारत में लोकप्रिय बनाने के साथ विदेशों में भी प्रभुता स्थापित की है। अब विदेशी भी हमारे शास्त्रीय संगीत को सीखने में गर्व अनुभव करते है।

**लोक वाद्य** : भारत की विविध संस्कृति तथा भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहां पर रहने

वाले विभिन्न प्रदेशों के लोगो का जनजीवन, काम धंधे तथा मनोरंजन के साधन भी एक जैसे नहीं है। यही वजह है कि यहाँ के वाद्य भी लोगो की आवश्यकता के अनुसार ही निर्मित हुए है।

लोक वाद्य भी चार प्रकार के हैः –

**तत् वाद्य** – ऐसे तार वाद्य जिनकी तार खींच कर बजाया जाता है जैसे एकतारा, दुतारा। बहुत से तार वाद्य गज से बजाये जाते है इन्हे वितत्त वाद्य भी कहते है जैसे सारंगी, इसराज इत्यादि। राजस्थान का रावण हत्था तथा महाराष्ट्र का कमाईचा भी इसी श्रेणी के वाद्य है।

**सुषिर वाद्य** – फूंक या हवा की सहायता से बजाये जाने वाले वाद्य यन्त्र बीन, हारमोनियम, शहनाई इत्यादि। अलगोजा पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान में बजाये जाने वाला लोक वाद्य है जिसमें दो बाँसुरी जुडी होती है। कृष्णा जी की बाँसुरी और शंख प्राचीन धार्मिक वाद्य है। तुरही सिंह के आकर का वाद्य है – इसे उत्तर में तुरी, राजस्थान में वांक्या, कर्णाटक में बांके, मध्य प्रदेश में रण सिंह आदि नामो से जाना जाता है।

**अवनद्ध वाद्य** – चमड़े से मढ़े लोक वाद्यों में डमरू, ढोलक,डफ, नगाड़ा इत्यादि प्रमुख है। ढोलक शादी विवाह में बजाया जाता है। पंजाब में भंगड़े तथा गिद्दे का भी प्रमुख वाद्य है। इनके अनेक रूप आज भी भारत के अनेक राज्यों में लोकगीतों के साथ तथा स्वतंत्र रूप में बजाये जाते है।

**घन वाद्य** – चोट या आघात द्वारा स्वर उत्पन्न करने वाले धातु के वाद्य अधिकतर लोक वाद्य के रूप में प्रयोग होते है। चिमटा, खरताल, मंजीरा, घुंघरू, झांझ, घंटी इत्यादि लोक वाद्य लोकगीतों तथा प्रार्थना एवं आरती में बजाये जाते है। मटका एक प्रभावकारी ताल वाद्य है – उत्तर भारत में लोकवाद्य तथा दक्षिण भारत में जाना जाने वाला ''घटम'' के रूप में शास्त्रीय वाद्य है।

वर्तमान में वाद्य प्रत्येक सांस्कृतिक कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसीलिए यह मनोरंजन के कार्यक्रमों के अतिरिक्त मानव जीवन की अनेक गतिविधियों में अपनी पैंठ बना चुका है। जिम तथा व्यायाम केंद्रों में यह वर्कआउट की क्षमता बढ़ाने, योग केंद्रों में एकाग्रता तथा उपचार केंद्रों में म्यूजिक थेरेपी द्वारा उपचार हेतु प्रयोग किया जाता है। अस्पताल के प्रतीक्षालय में रोगी तथा उसके सहायक को तनाव मुक्त करने और हवाई अड्डे , रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैंड के प्रतीक्षालयों में वातावरण को खुशनुमा बनाने वाद्य वादन का भरपूर प्रयोग किया जाता है। इसी तरह होटल, रेस्टॉरेंट, बैंक, उद्योग आदि भोजन के समय वाद्य वादन का संयोजन कर सुखद परिवेश को रूपांतरित करते है।

## संदर्भ सूची

1. बी. चैतन्य देव, वाद्य यन्त्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।
2. बसंत, संगीत विशारद्, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तरप्रदेश।